एकाग्रता के बिना ज्ञान नहीं

गहन शान्ति में उतरकर भगवान बुद्ध अपने शिष्यों को सद्ज्ञान बॉट रहे थे। अचानक वे मौन हो गए । सभी शिष्य स्तब्ध रह गए । लेकिन पूछने का साहस किसी में नहीं था। कुछ देर तक सही समय की प्रतीक्षा कर भिक्षुकों ने आदर पूर्वक पूछा भगवन्! बोलते – बोलते आप अचानक चुप कैसे हो गए? कारण हमारी समझ में नहीं आया।

बुद्ध ने कहाः "उस समय सुनने वाला कोई नहीं था इसलिए मैं चुप हो गया।" शिष्यों ने कहा "हम सभी तो बैठे थे।" आप सब केवल शरीर से यहॉ थे चेतना से नहीं कोई शिर घुमाकर देख रहा था तो कोई अपना पैर खुजला रहा था किसी का घुटना हिल रहा था तो कोई ऊपर उड़ती मधुमक्खी को देख रहा था तुम लोगो का चित एकाग्र नहीं था। जबकि सद्ज्ञान के लिए चित की एकाग्रता अति आवश्यक है। जबतक चित एकाग्र नहीं होगा तब तक शरीर का चांचल्य नहीं गिरेगा और इस स्थिति में ज्ञान प्राप्त करना सम्भव नहीं है। अतः मैने बोलना बंद कर दिया था। यदि आप चाहते हैं कि हम परम ज्ञान को प्राप्त कर आनन्द को प्राप्त होवें, तो तन मन दोनो को स्वस्थ, शुद्ध एवं एकाग्र रखना होगा। तभी आप अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकोगे।

बुद्ध का यह उपदेश सुनकर शिष्यों को बड़ी आत्मग्लानि हुई और उन्होने आगे से ज्ञान प्राप्ति के समय पूरी एकाग्रता रखने का संकल्प लिया।

संकलन

डा0 एक राम द्विवेदी

वायु सेना उ0 मा0 विद्यालय

रेस कोर्स, नई दिल्ली

संस्कृत मगलशान्तिप्रार्थनामन्त्राः

ऊँ शन्नो मित्रः शं वरुणः

शन्नो भवत्वर्यमा।

शन्न इन्द्रो वृहस्पतिः

शन्नो विष्णु रूरू क्रमः।।1।।

नमो बह्मणे नमस्ते वायो

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्यासि।

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।।2।।

तन्मामवतु तद् वक्तार मवतु।

अवतु माम्।

अवतु वक्तारम्।।3।।

ऊँ असतो मा सद्गमय

तमसो माज्योतिर्गमय

मृत्योर्मा अमृतं गमय ।।4।।

ऊँ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।।5।।

भावार्थः

मित्र रूपी परमात्मा, सज्जनों के मित्र, न्याय प्रदाता समस्त ऐश्वर्यो, धनधान्यादि पदार्थों के दाता, आकाशादि ब्रह्यमाण्ड के स्वामी, चराचर जगत् में व्याप्त अनन्त शक्ति वाले परमात्मा हम सबका कल्याण करें।।1।।

हे वायुरूपी अनन्त शक्ति युक्त वायु रूपी परमात्मा! आपको नमस्कार है। आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं। आपको ही प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। आपके ही अनुसार धर्माचरण करूँगा। सत्य बोलूँगा अतः हम सत्य बोलने वाले की हर प्रकार से रक्षा करें।।2।।3।।

हे परब्रह्म! हमें असत् मार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर अग्रसर करें। अन्धकार अज्ञान से हटाकर प्रकाश ज्ञान की ओर प्रेषित करें। मृत्यु–भय, व्याधि दुःख क्षति की ओर से हटाकर अमरत्व–भय, व्याधि रहित सुख शान्ति युक्त उन्नति का मार्ग प्रदान करें।

हमारे जीवन में सदैव चहुँ ओर शान्ति ही शान्ति रहे।

संकलन एवं व्याख्या

डा0 ई0 आर0 द्विवेदी

वायु सेना उ0 मा0 विद्यालय

रेस कोर्स, नई दिल्ली